कमल से भरा आकाश

शान्ती कृष्णास्वामी

चित्राँकनः सुजाता सिंह

यह किताब

....

की है

इस किताब के प्रकाशन में सहायता के लिए कथा

कॉगनिज़ेंट फाउण्डेशन,

चेन्नई की आभारी है।

v/;kid@v/;kfidkvks ds fy,

cMs mnns'; Ükk[kyk – इस श्रृंखला की पुस्तकों में कहानियों द्‌वारा बच्चों को अपने वातावरण, जीवन और भविष्य के प्रति सजग एवं सक्रिय होने की प्रेरणा दी जा रही है।

dey ls Hkjk vkdk'k कहानी बाल श्रम से पहुँचने वाली हानि की ओर ध्यान आकर्षित करती है। बच्चों को शिक्षा के भविष्य से जुड़े होने की बातें बताएँ। संज्ञा और सर्वनाम का अभ्यास कराएँ।

कमल से भरा आकाश

शान्ती कृष्णास्वामी

चित्रांँकनः सुजाता सिंह

कथा

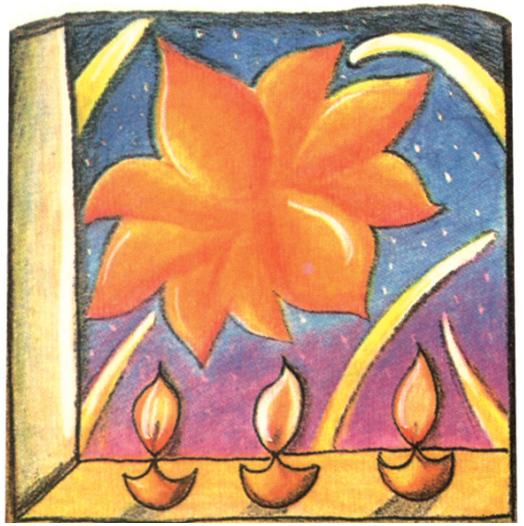

सूरज की बाईं ओर और चन्द्रमा की दाईं ओर, एक छोटा-सा शहर था चमकपुरी।

चमकपुरी में पटाख़ों के कई कारखाने थे।

उनमें से, चमक पटाख़ा कम्पनी के पटाख़े अपने इन्द्रधनुषी रंगों के लिए, दूर-दूर तक मशहूर थे।

मत्थपु कम्पनी के पटाख़े खूब ज़ोर-से फटते थे, और जलाने के बाद काफ़ी देर तक उन पटाख़ों की आवाज़ कानों में गूँजती थी।

मिनमिनी पटाख़ा कम्पनी के बाहर, लोग घंटों लाईन में खड़े होकर पटाख़े ख़रीदते थे।

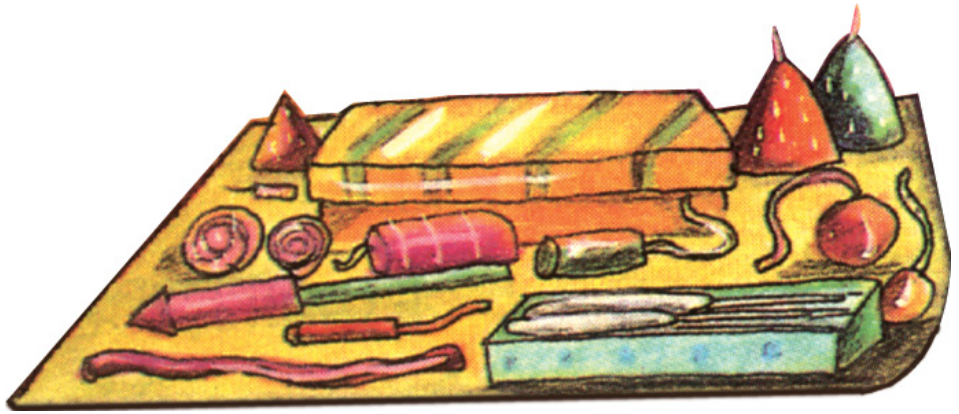

“हमारे पटाख़े हैं ही ख़ास। दूर आसमान में जाकर रंग बदलते हैं,” गर्व से कम्पनी के मालिक, माथेन बाबू कहा करते थे।

पर सबसे ख़ास पटाख़े बनाता था मुत्थु, एक छोटा-सा लड़का जिसने यह कला अपने पिताजी से सीखी थी।

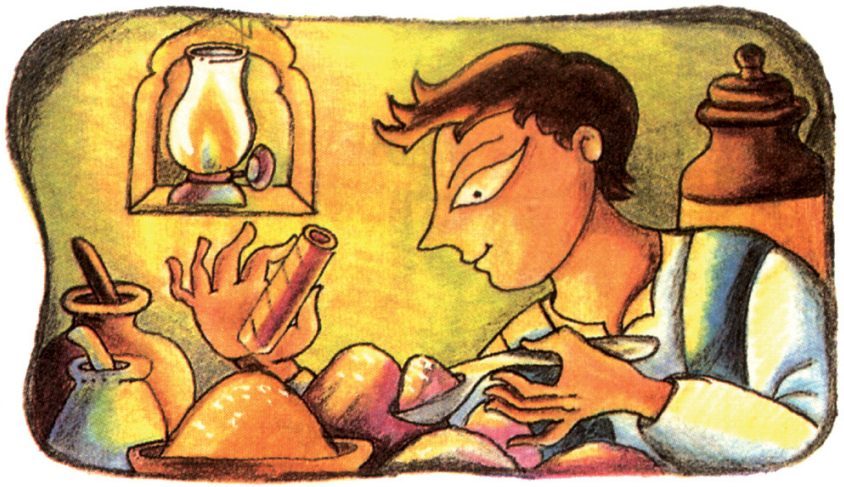

दूर आकाश में जाकर मुत्थु के रॉकेट कमल के फूल बनकर फटते थे।

कमल का रंग भी ख़ूब चमकता था।

"ये पटाख़े एक बार नहीं, कई बार फटते हैं," बच्चे कहते थे।

मुत्थु के पटाख़े सभी को अच्छे लगते थे, केवल माथेन बाबू को छोड़कर।

वे दिन-रात इसी माथा-पच्ची में लगे रहते कि, किस तरह मुत्थु के पटाख़ों का राज़ जाना जाए।

एक रात माथेन बाबू मुत्थु के घर में चुपचाप घुस गए। उन्होंने मुत्थु को एक पुरानी बोरी में डाला, उसे उठाकर ले गए और फिर उसे बाँधकर, मिनमिनी पटाख़ा कम्पनी के एक अंधेरे कमरे में बंद कर दिया।

कई महीने बीत गए। दिवाली का दिन नज़दीक आ रहा था। तब चमकपुरी के बच्चों को मुत्थु की याद आई। पर यह क्या? मुत्थु तो कहीं दिखाई ही नहीं दे रहा था!

"अगर तीन साल पहले, अपने पिता के मरने के बाद, मुत्थु ने स्कूल जाना बंद न कर दिया होता, तो हम पहले दिन से ही उसे ढूँढने लगते," अफ़ज़ल ने कहा।

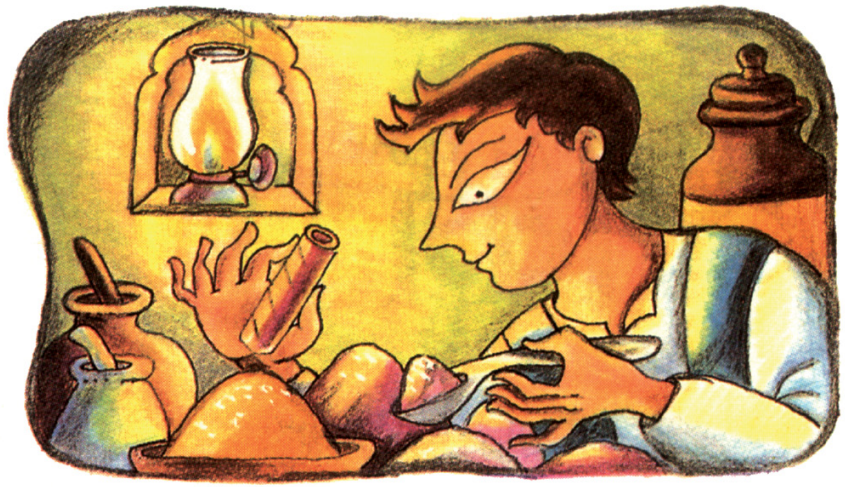

उधर माथेन बाबू की फ़ैक्टरी के अंधेरे कमरे में बंद मुत्थु, बहुत ही अकेला और डरा हुआ था।

वह मन ही मन यह प्रार्थना कर रहा था कि काश, कोई उसे ढूँढ निकाले।

वह कई हफ़्तों से माथेन बाबू के अत्याचारों को सह रहा था। माथेन बाबू के गुँडों ने उसकी पिटाई भी की थी और उसे कई दिनों से खाने के लिए कुछ भी नहीं दिया गया था।

“जल्दी से हमें अपने ख़ास पटाखों का राज़ बता दो,” गुँडों ने उसे धमकाया, “नहीं तो हम तुम्हें जान से मार देंगे!”

आख़िरकार मुत्थु से और नहीं सहा गया। उसने माथेन बाबू को अपने ख़ास पटाख़ों का राज़ बता ही दिया।

“अब ज़िन्दगी भर तुम मेरे गुलाम बनकर रहोगे। कोई नहीं है तुम्हें बचानेवाला!” माथेन बाबू ने मुत्थु पर दहाड़ते हुए कहा।

दिवाली से एक महीने पहले, माथेन बाबू ने मुत्थु द्वारा बताए गए तरीके से बनाए पटाख़ों को आज़माना चाहा।

फिर देखते ही देखते पूरा आसमान हज़ारों कमलों से भर गया। और ...

“मुत्थु को माथेन बाबू ने ही छुपाकर रखा है!” लछमी ने मिनमिनी की फ़ैक्टरी से निकलते कमल के फूलों को देखकर कहा, “चलो उसे छुड़ाने चलें!”

“जब तक दिवाली नहीं आई थी और हमें पटाख़ों की ज़रूरत नहीं पड़ी थी, तब तक तो हमने तुम्हें अपना दोस्त ही न माना था,” मुत्थु को छुड़ाने के बाद, चमकपुरी के बच्चों ने मुत्थु से कहा। उन्हें खुद पर शर्म आ रही थी।

"और मुझे लगता था कि मुझ ग़रीब का भला तुम लोगों से क्या मुकाबला," मुत्थु ने धीरे-से कहा, "अब तो मैं वे विशेष पटाखे भी नहीं बना सकता। न जाने मेरा गुज़ारा कैसे चलेगा?"

सब बच्चे मुस्काने लगे, "जब हम तुम्हें ढूँढ रहे थे, तब हम सब ने मिलकर यह सोचा था कि तुम्हें स्कूल ज़रूर आना चाहिए।

स्कूल हम सब बच्चों के लिए सबसे अच्छी जगह है। क्या हुआ अगर तुम्हारे पिताजी का राज़ अब राज़ नहीं रहा?"

और बहुत-से ऐसे काम हैं जिन्हें करके तुम अच्छा पैसा कमा सकते हो।”

“स्कूल चलो न, मुत्थु,” लछमी ने कहा।

“पर काम नहीं करूँगा तो मैं खाऊँगा क्या?” मुत्थु ने पूछा।

“यह तुम अपने दोस्तों पर छोड़ दो,” बच्चों ने कहा।

मुत्थु ने अपने नए दोस्तों की ओर देखा। उसे लगा कि उसका सपना सच हो जाएगा। बड़ा होकर वह टीचर बन सकेगा।

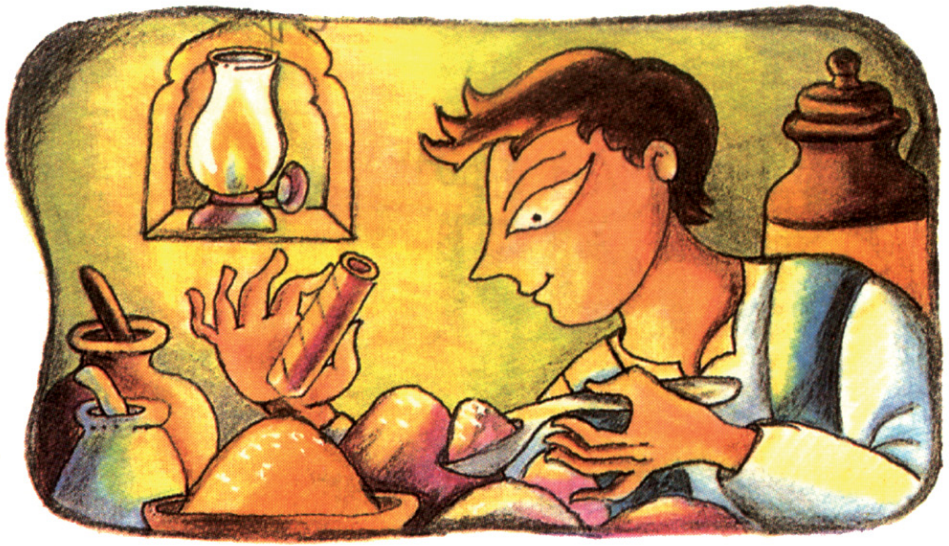

“ठीक है,” उसने मुस्काते हुए कहा, “पर एक बार, मुझे अपने कुछ ख़ास दोस्तों के लिए कुछ ख़ास पटाख़े बनाने दो!”

बदलते मौसम

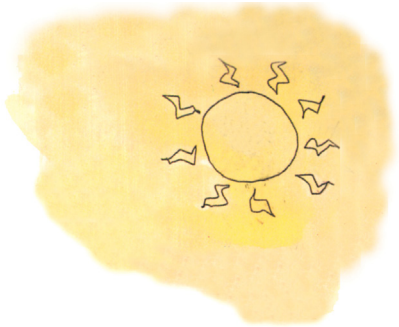

मौसम के संग
हैं बदलते पृथ्वी के रंग
पहचानो कौन से हैं
ये मौसम!

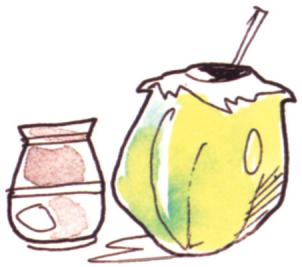

तपते धरती, आकाश,
जाते नदी, नाले सूख
होते बेहाल पंछी, जानवर, इंसान
जल्दी बताओ क्या है मेरा नाम

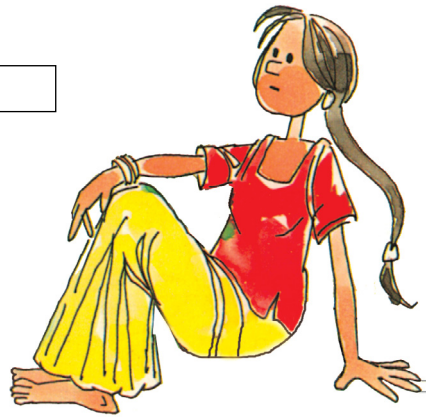

लगती अब धूप भली,
भाती गरम-गरम चाय
मानूँ मैं उसको
जो मेरा नाम बताए

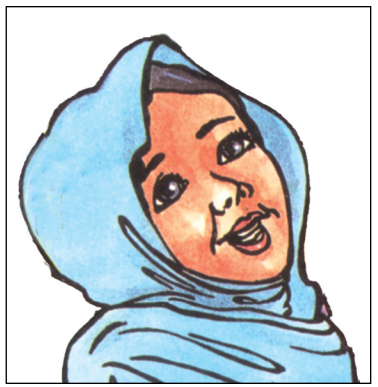

कभी रिमझिम फुहार,
कभी बाढ़ के आसार
पर लगती सबको भली मैं,
अब बताओ कौन हूँ मैं ?

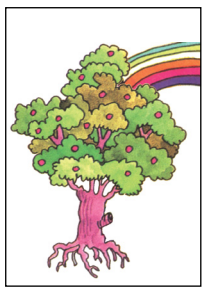

खिलते फूल, गाते पंछी
जब आऊँ मैं इठलाती,
हवा में सुगंध, मन में
उमंग सबका मन हर्षाती

उत्तरः गरमी, सरदी,
बरसात, बसंत

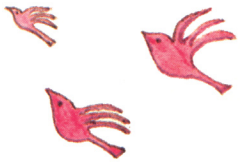

चित्राँकनः जय,
वंदना बिष्ट एवं अतनु रॉय

ये शब्द अब हैं दोस्त हमारे

अत्याचार
ख़ास
राज़
ज़िन्दगी

दहाड़े
छुड़ाना
ज़रूरत
विश्वास

भारत के दक्षिणी राज्य तमिल नाडु में पैदा हुई 'kkUrh d".kkLokeh को नन्हे–मुन्नों के लिए लिखना बेहद अच्छा लगता है और उनका कहना है कि उन्हें लिखने की प्रेरणा अपने आस–पास की दुनिया से ही मिलती है। षान्ती अपनी पालतु बिल्ली के साथ चेन्नई में रहती हैं।

vru jk; ने सौ से भी अधिक बच्चों की किताबों के लिए चित्रांकन किया है। उन्होंने अपना अधिकतर कल्पना कौशल बाल साहित्य को समर्पित किया है। फिर यह कोई अचम्भे का कारण नहीं है कि अतनु, जो कि इंडिया टुडे में राजनैतिक कार्टूनिस्ट रह चुके हैं, को बच्चों की चित्रकारी के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है जैसे चिल्ड्रन्स चॉइस अवॉर्ड फ़ॉर बुक इलस्ट्रेशन और इब्बी सर्टिफ़िकेट ऑफ़ ऑनर फ़ॉर इलस्ट्रेशन।

सीरीज संपादिका: गीता धर्मराजन

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है। इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

मेरी अगली कहानी

अगड़म, बगड़म, तिगड़म हम
झट-पट सीखें अक्षर हम।
200 दोस्त बनें कम से कम
तिगड़म अगड़म बगड़म हम!

KATHA

यह कहानी "तमाशा" में सन् 1991 में प्रकाशित हो चुकी है
दूसरा संस्करण 2007, तीसरा संस्करण 2009, चौथा संस्करण 2010, पाँचवाँ संस्करण 2010, छठवाँ संस्करण 2013

कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

एजियन ऑफ्सेट, नोएडा (उत्तर प्रदेश) द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-87649-64-9
संपादकीय टीम: वैशाली माथुर, युक्ति बैनर्जी

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलने वाली खुशी को बढ़ावा देना। कथा स्कूल दिल्ली के बस्ती, मोहल्लों और अरुणाचल प्रदेश के आदिवासी क्षेत्रों में स्थित है।
ए 3 सर्वोदय एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग
नई दिल्ली–110017
दूरभाष: 4141 6600, 4182 9998, फैक्स: 2651 4373
ई मेल: ilr@katha.org, इंटरनेट: http://www.katha.org
प्रोडक्शन टीम: प्रकाश आचार्य, यशपाल बिष्ट, विक्रम कुमार

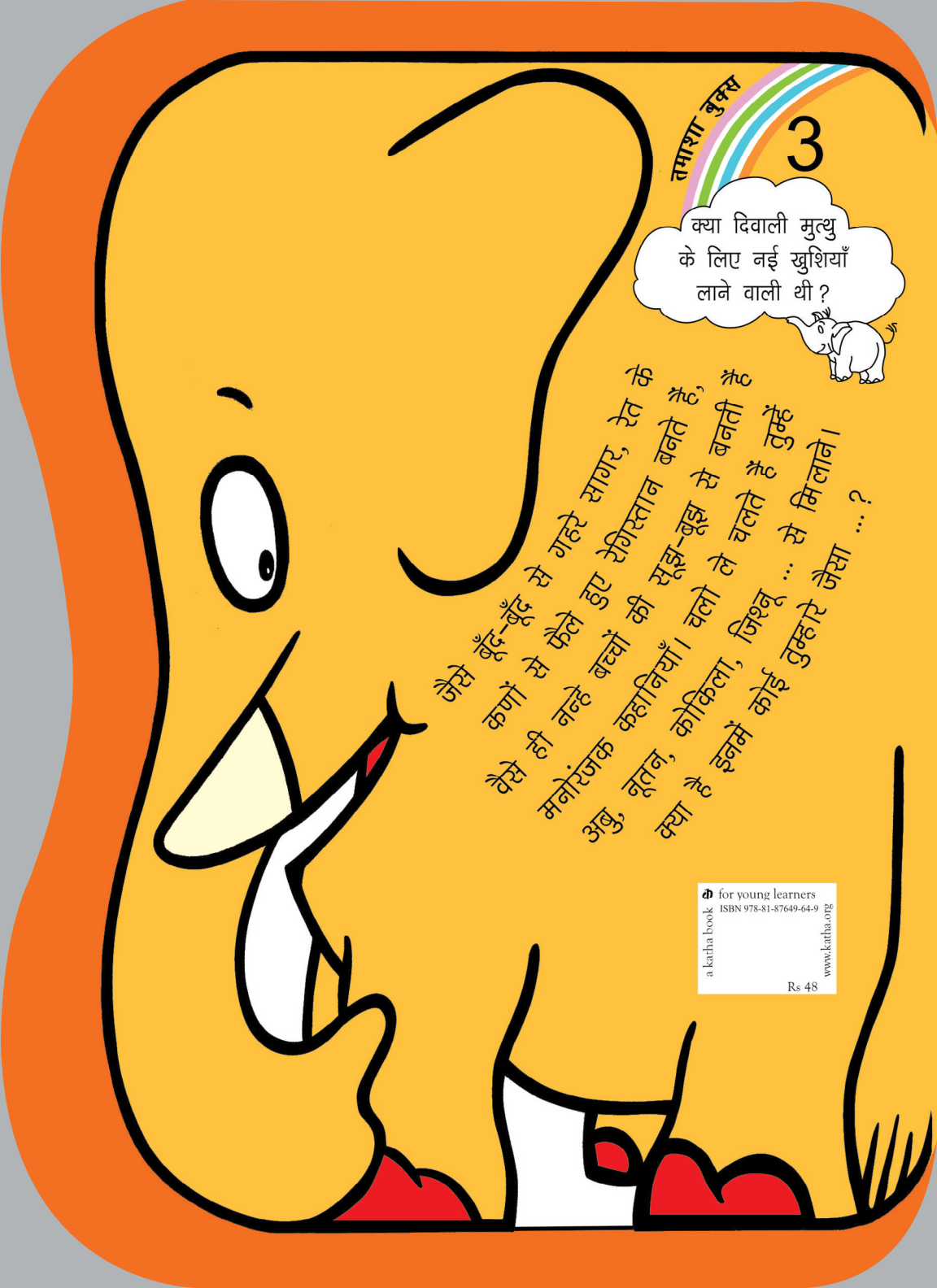

जैसे बूँद-बूँद से गहरे सागर, रेत के
कणों से फैले हुए रेगिस्तान बनते हैं,
वैसे ही नन्हे बच्चों की सूझ-बूझ से बनती हैं
मनोरंजक कहानियाँ। चलो ले चलते हैं तुम्हें
अबु, नूतन, कोकिला, जिश्नू ... से मिलाने।
क्या है इनमें कोई तुम्हारे जैसा ...?

a katha book for young learners
ISBN 978-81-87649-64-9
www.katha.org
Rs 48